॥ निगुरे नहीं रहना ॥

सुन लो चतुर सुजान निगुरे नहीं रहना ॥

निगुरे का नहीं कहीं ठिकाना चोरासी में आना जाना ।
पड़े नरक की खान निगुरे नहीं रहना । सुन लो चतुर ...

गुरु बिन माला क्या सट्कावै मनवा चहुँ दिश फिरता जावे ।
यम का बने मेहमान निगुरे नहीं रहना । सुन लो चतुर ...

हीरे जैसी सुन्दर काया हरि भजन बिन जनम गँवाया ।
कैसे हो कल्याण निगुरे नहीं रहना । सुन लो चतुर ...

निगुरा होता हिय का अन्धा खूब करे संसार का धन्धा ।
क्यों करता अभिमान निगुरे नहीं रहना । सुन लो चतुर ...

सुन लो चतुर सुजान निगुरे नहीं रहना ॥

Send corrections to hariomgroup@gmail.com